



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख : 25 अक्टूबर, 2014
Date of Issue : 25 October, 2014

मूल्यवर्ग : 500 पैसा
Denomination : 500 p

मुद्रित डाक-टिकटें : 6 लाख
Stamps Printed : 0.6 Million

मुद्रण प्रक्रिया : वेट ऑफसेट
Printing Process : Wet Offset

मुद्रक : प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer : Security Printing Press,
Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00



भारतीय डाक विभाग Department of Posts India



अनागारिक धर्मपाल
ANAGARIKA DHARMAPALA

विवरणिका BROCHURE

अनागारिक धर्मपाल

अनागारिक धर्मपाल, जिन्होंने अपने जन्म स्थान सिलोन (अंब श्रीलंका) और विश्व के अन्य भागों में बौद्ध धर्म के पुनरुत्थान में एक अग्रणी भूमिका निभाई थी, का जन्म 17 सितम्बर, 1864 में कोलम्बो के पेद्दाह जिले में हुआ था। बचपन में उनका नाम डेविड हेवावितरने था। उनका लालन-पालन पारंपरिक सिंहाला धर्मपरायणता के माहौल में हुआ। उन्होंने बहुत कम आयु में ही बुद्ध, धर्म और संघ में शरण ली और पांच नीतिवचनों का अनुपालन करने का वचन लिया।

9 वर्ष की अल्प आयु में डेविड को उनके पिता ने ब्रह्मचर्य का अनुपालन करने की शिक्षा दी तथा खाने को जो भी मिले उससे संतुष्ट रहने तथा कम निद्रा की सलाह दी। अनागारिक स्वभाव से ही संत प्रकृति के थे। उन्हें एकांत, चिंतन और अध्ययन प्रिय थे। वे मैडम ब्लावत्स्की और थियोसोफिकल सोसायटी के संपर्क में आए और उसके अनुयायी बन गए। मानवता की सेवा में अपना जीवन समर्पित करने के उद्देश्य से उन्होंने बीस वर्ष की आयु में अपना गृह त्याग दिया। उन्होंने अपना अंग्रेजी नाम त्याग कर स्वयं को 'अनागारिक' अथवा 'बेघर', 'धर्मपाल' अथवा 'धर्म का रक्षक' कहा। उन्होंने विद्यालयों की स्थापना में मदद की और बौद्ध आदर्शों का प्रचार किया।

धर्मपाल ने जनवरी, 1891 में बौद्ध गया, भारत की यात्रा की जिसने उनके जीवन और आधुनिक बौद्ध इतिहास की दिशा को परिवर्तित कर दिया। बौद्ध गया के मंदिर पहुंचने पर उन्होंने पाया कि वह स्थान जर्जर अवस्था में था। उन्होंने उस

पावन स्थल की देखभाल करने और उसे संरक्षित करने का निर्णय लिया। उन्होंने इस बौद्ध मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए निधियां जुटाने के उद्देश्य से विश्व के विभिन्न भागों की यात्रा की तथा 31 मई, 1891 में कोलम्बो में महाबोधि सोसायटी की स्थापना की। महाबोधि सोसायटी के कार्यालय को 1892 के आरंभ में कलकत्ता में स्थानांतरित किया गया। धर्मपाल ने महाबोधि पत्रिका की भी शुरुआत की ताकि बौद्ध देशों के मध्य समाचारों के आदान-प्रदान का कार्य सुगमतापूर्वक हो सके।

अनागारिक धर्मपाल ने 1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद में भाग लिया। इस संसद में वे बेहद लोकप्रिय वक्ताओं में से एक थे। अनागारिक जीवनपर्यंत बौद्ध सिद्धांतों के बारे में व्याख्यान देते तथा लिखते रहे। उन्होंने कलकत्ता में श्री धर्मराजिका चैत्य विहार और लंदन बौद्ध विहार की स्थापना की।

29 अप्रैल, 1933 को सारनाथ में अनागारिक धर्मपाल का देहान्त हो गया।

डाक विभाग अनागारिक धर्मपाल पर स्मारक डाक-टिकट जारी करके प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आमार :-

मूलपाठ	: भारतीय महाबोधि सोसायटी और इंटरनेट से उपलब्ध सामग्री पर आधारित।
डाक-टिकट/ प्रथम दिवस आवरण	: शंख सामंत
विरूपण	: अलका शर्मा

ANAGARIKA DHARMAPALA

Anagarika Dharmapala, who played a leading role in the revival of Buddhism in his native place Ceylon (now Sri Lanka) and other parts of the world, was born on 17th September, 1864 in the Pettah district of Colombo. His childhood name was David Hewavitarne. He grew up in an atmosphere of traditional Sinhala piety. From a young age, he took refuge in the Buddha, the Dharma and the Sangha, and promised to observe the Five Precepts.

At the age of 9, young David was initiated into the vow of Brahmacharya by his father, and, was advised to be content with whatever he got to eat, and to sleep less. Anagarika's temperament was ascetic in nature and he loved solitude, meditation and study. He came in contact with Madame Blavatsky and the Theosophical Society and became a follower. He left his home at the age of twenty to dedicate his life in the service of humanity. He renounced his English name and called himself 'Anagarika' or 'homeless one', 'Dharmapala' or 'the protector of dharma'. He helped in establishing schools, and propagated Buddhist ideals.

Dharmapala's visit to Bodh Gaya, India in January, 1891 changed his life, and the course of modern Buddhist history. When he visited the

temple at Bodh Gaya, the place was in shambles. He decided to take on the task of taking care and protecting the holy place. He travelled to various parts of the world to mobilize funds for renovation of the Buddhist temple and founded the Mahabodhi Society in Colombo on 31st May, 1891. The office of the Mahabodhi Society was shifted to Calcutta in early 1892. Dharmapala also started the Maha Bodhi Journal to facilitate interchange of news between the Buddhist countries.

Anagarika Dharmapala attended the World's Parliament on Religion in Chicago in 1893. He was one of the most popular speakers at the Parliament. All his life, Anagarika continued to lecture and write about Buddhist principles. He set up Sri Dharmarajika Chaitya Vihara at Calcutta and the London Buddhist Vihara.

Anagarika Dharmapala died on 29th April, 1933 at Sarnath.

Department of Posts is happy to release a Commemorative Postage Stamp on Anagarika Dharmapala.

Credits:-

- Text : Based on the material furnished by the Mahabodhi Society of India and internet
- Stamp/FDC : Sankha Samanta
- Cancellation : Alka Sharma